**खादी और ग्रामोद्योग आयोग को वित्तीय सहायता**

402 : **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
**श्री राम जेठमलानी :**

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि खादी और ग्रामोद्योग आयोग को वित्तीय सहायता दी जाती है ;

(ख) यदि हां, तो आयोग को क्रमश: 1991–92, 1992–93 तथा 1993–94 के वर्षों के दौरान कितनी-कितनी वित्तीय सहायता प्रदान की गई है ;

(ग) क्या खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा सरकार द्वारा दी गई धनराशि का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों के विस्तार और सुधार करने के लिए किया गया है ; और

(घ) यदि हां, तो गत तीन वर्षों के दौरान 1993–94 तक खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कुल कितने कुटीर उद्योग स्थापित किए गए ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम. अरुणाचलम) : (क) जी, हां ।

(ख) वर्ष 1991–92, 1992–93 और 1993–94 के दौरान केन्द्र सरकार द्वारा खादी और ग्रामोद्योग को दी गई वित्तीय सहायता इस प्रकार है :–

| वर्ष | योजनागत | गैर-योजनागत |
|---|---|---|
| | (रु. करोड़ में) | |
| 1991–92 | 193.00 | 213.28 |
| 1992–93 | 193.00 | 161.00 |
| 1993–94 | 202.00 | 325.94 |

(ग) के० वा० आई० सी० ने सरकार द्वारा दी गई धनराशि का उपयोग सारे देश में खादी और ग्रामोद्योग के विकास के लिए किया है।

(घ) वर्ष 1991–92, 1992-93 और 1993–94 के दौरान कारीगरों/कर्मचारियों की संख्या इस प्रकार है :–

(लाख व्यक्ति)

| वर्ष | रोजगार |
|---|---|
| 1991–92 | 50.16 |
| 1992–93 | 52.50 |
| 1993–94 | 53.28 |

**वित्तीय सहायता उपलब्ध न होने के कारण लघुउद्योगों का रुग्ण होना**

403 **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
**श्री राम जेठमलानी :**

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 29 अगस्त, 1994 के दैनिक "ट्रिब्यून" में "वर्किंग कैपीटल प्रॉब्लमस ऑफ एस एस आईज" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि देश में लघु उद्योगों में बढ़ती रुग्णता का प्रमुख कारण उन्हें समय पर समुचित वित्तीय सहायता का न मिल पाना है ; और

(ग) यदि हां, तो देश में रुग्णता विशेष रूप से लघु उद्योगों में रुग्णता बढ़ने के क्या कारण हैं ; और इस प्रकार से प्रभावित उद्योगों के प्रतिशत का तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं ?

**उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम० अरुणाचलम)** : (क) जी, हां।